1. पशुओं में बीमारी से रोकथाम हेतु टीकाकरण किस माह में आवश्यक है।

बरसात से पूर्व गलाघोटूँ (एच0एस0), लगड़ी (बी0क्यू0) तथा खूरपका–मुँहपका (एफ0एम0डी0) का टीकाकरण एक–एक सप्ताह के अंतराल पर लगवाया जाना चाहिये।

खूरपका–मुँहपका (एफ0एम0डी0) का टीका छ माह के अंतराल पर पुनः लगवाना चाहिये। यदि माह मई–जून में टीकाकरण हुआ है तो नवम्बर–दिसम्बर माह में पुनः टीका लगवाना चाहिये।

शीत ऋतु से पूर्व बकरियों में पी0पी0आर0 का टीकाकरण लगवाना चाहियें। यह टीकाकरण बकरियों को उनके जीवन में एक बार ही लगता है क्यों कि इस टीकाकरण की प्रतिरोधक क्षमता तीन वर्ष की होती है।

टीकाकरण हेतु समीप के पशुचिकित्सालय व पशुसेवाकेन्द्र पर संपर्क करें।

2. बरसात से पूर्व किस बीमारी का टीका लगवाना चाहिये।

बरसात से पूर्व गलाघोटूँ (एच0एस0), लगड़ी (बी0क्यू0) तथा खूरपका–मुँहपका (एफ0एम0डी0) का टीकाकरण एक–एक सप्ताह के अंतराल पर लगवाया जाना चाहिये।

3. प्रतिपशु टीका लगवाने की सरकारी लेबी कितनी है।

बड़े पशु	रू0 2/–प्रति
छोटे पशु	रू0 2/–प्रति

4. भूसा एवं हरा चारा किस अनुपात में पशुओं को खिलाना चाहिये।

40 प्रतिशत भूसा एवं 60 प्रतिशत हरा चारा।

5. पशुओं में पेट के कीडों से बचाव हेतु कितने अंतराल पर कृमीनाशक दवा देनी चाहिये।

तीन माह के अंतराल पर पशुचिकित्सक की सलाह पर।

6. गाय दो साल से हीट में नहीं आयी है क्या हीट में लाने का कोई उपाय है।

हाँ। इस हेतु परियोजना से ग्राम में लगने वाले पशुचिकित्सा शिविरों में अपने पशु की जाँच करवायें या समीप के पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सक से से सलाह ले।

7. गाय में तीन से चार माह पर गर्भपात होने पर इसकी रोकथाम के लिये क्या करें।

यह समस्या एक प्रकार के रोग से जनित है इसके लिये पशु को तीन लगातार हीट आने पर गर्भाधान न कराये तथा समीप के पशुचिकित्सालय के पशुचिकित्सक से से सलाह ले।

8. पशु के दूध को बढ़ाने हेतु क्या उपाय हैं।

पशुओं में दूध का उत्पादन उसकी प्रजाति एवं उत्पादन क्षमता पर निर्भर करता है परन्तु सही रख–रखाव, संतुलित आहार तथा स्वास्थ्य प्रबन्धन की समुचित व्यवस्था/उपलब्धता न होने के कारण दूध उत्पादन प्रभावित होता है। इसके लिये आवश्यक है कि दूधारू पशुओं को स्वच्छ स्थान पर रखें, भोजन में हरे चारे की प्रचूर मात्रा तथा संकेद्रित आहार तीन लीटर दूग्ध उत्पादन पर एक कि0ग्रा0 सुबह एवं शाम अवश्य दें। पशुओं को मिनरल मिक्स्चर प्रतिदिन देने से उसके प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि के साथ–साथ दूध उत्पादन पर भी अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

9. गाय/भैंस में थनैला रोग से बचाव हेतु क्या करना चाहिये।

दूध दूहने से पहले हाथ को तथा थन को साफ पानी से धोना चाहिये तथा दूध निकालने के बाद थन को पानी से धोकर सूखे साफ कपड़े से पोछना चाहिये जिससे जिवाणुओं के प्रवेश की संभावना कम हो। इसके अतिरिक्त दूधारू पशु को ऐसे स्थान पर नहीं रखना चाहिये जहाँ कड़ी जमीन हो तथा कंकड़ हो ये पशु के बैठने पर उसके थन पर दबाव बनाते है जिससे थन में चोट लगने की संभावना रहती है और थनैला (थन में सूजन) हो जाता है।

10. गाय/भैंस के बच्चें को क्या माँ का पहला दूध–खीस पिलाना चाहिये। ऐसा पाया गया है कि बच्चों को पहला दूध पिलाने से उनकी मृत्यू हो जाती है।

किसी भी नवजात शिशु को उसकी माँ का प्रथम दूध (कोलस्ट्रम) अवश्य पिलाना चाहिये ये बच्चे को बिमारी से बचाने में सहायक होता है तथा बच्चे में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। माँ के प्रथम दूध (कोलस्ट्रम) को पिलाने से बच्चे की मृत्यू नहीं होती है यदि बच्चे को उसकी क्षमता से अत्यधिक कोलस्ट्रम एक बार में ही पिला दिया जाता है तो पाचन क्रिया असंतुलित होने के कारण अफरा (पेट फूलने) से बच्चे की मृत्यू की संभावना रहती है अतः बच्चे को एक बार में कम परन्तु प्रत्येक दो धण्टे के अंतराल पर दूध पिलाना चाहिये। गाय का बच्चा जन्म के एक से दो घण्टे में तथा भैंस का बच्चा तीन से चार घण्टे में अपने आप माँ का दूध पीने की चेष्टा करने लगता है तथा माँ के थन के पास स्वतः जाने लगता है।

11. गाय/भैंस के बच्चा देने के उपरान्त कितने समय के बाद तथा कितना दूध निकालना चाहिये।

गाय/भैंस के बच्चा देने के उपरान्त तथा खेड़ी/जेर/प्लेसेन्टा अपने आप गिर जाने के पश्चात शरीर एवं थन को सूती कपड़ा गुनगुने पानी में भिगो कर अच्छी तरह से पोछ लेना चाहिये। इसके उपरान्त चारो थनो को खोलते हुए एक चौथाई प्रथम दूध ही निकालना चाहिये तथा बच्चे को कुछ मात्रा अर्थात 100 से 150 ग्राम कोलस्ट्रम पिला कर थन को साफ पानी से धोना चाहिये। पुनः दो धण्टे के अंतराल पर यह प्रक्रिया दोहरानी चाहिये। इस प्रक्रिया से दूधारू पशुओं में हाने वाली समस्या मिल्क फिवर से बचाव किया जा सकता है।

12. गाय/भैंस के बच्चा देने के उपरान्त खेड़ी/जेर/प्लेसेन्टा कितने समय में बाहर निकल जाना चाहिये। यदि नहीं निकलता है तो क्या सूझाव हैं।

गाय/भैंस के बच्चा देने के उपरान्त खेड़ी/जेर/प्लेसेन्टा तीन घण्टे के अन्दर शरीर से बाहर निकल जाना चाहिये। यदि नहीं निकलता है तो तत्काल निकट के पशुचिकित्सक से संपर्क करें।

प्रश्न सोडिक तृतीय परियोजना में कृशि घटक के अन्तर्गत किस प्रकार के प्रदर्शन आयोजित कराये जाते हैं ?

उत्तर : आई0पी0एन0एम0, आई0पी0एम0, फसल विविधीकरण, नादेप, वर्मीकम्पोस्ट और मधुमक्खी पालन।

आई0पी0एन0एम0

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 के प्रदर्शन किस सीजनं में आयोजित कराये जाते है ?

उत्तर : आई0पी0एन0एम0 के प्रदर्शन तीनों सीजन की फसलों में आयोजित कराये जाते हैं

प्रश्न सोडिक तृतीय परियोजना में किन–किन फसलों में आई0पी0एन0एम0 के प्रदर्शन कराये जा रहे है ?

उत्तर सोडिक तृतीय परियोजना के अन्तर्गत खरीफ में हाइब्रीड धान, रबी में गेहूँ तथा जायद में उर्द एवं मूँग के प्रदर्शन आयोजित कराये जा रहे हैं ?

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 का प्रर्दशन कितने क्षेत्र में आयोजित किया जाता है ?

उत्तर आई0पी0एन0एम0 का प्रर्दशन 0.4 हेक्टेयर में किया जाता है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 प्रदर्शन के कितने क्षेत्र में बीज तथा कितने क्षेत्र हेतु निवेश दिया जाता है ?

उत्तर – पूरे क्षेत्र 0.4 हेक्टेयर में बीज तथा अन्य निवेश .30 हे0 क्षेत्र में दी जाती है। .10 हे0 क्षेत्र कन्टोल प्लाट का रहता है।

प्रश्न प्रदर्शन में किन प्रजातियों को लिया जाता है ?

उत्तर – प्रदर्शन में उस शस्य जलवायु क्षेत्र के लिये संस्तुत नवीनतम उन्नतशील तथा अधिक उपज देने वाली प्रजाति का चयन किया जाता है।

प्रश्न प्रदर्शन में कौन–कौन से निवेश दिये जाते हैं ?

उत्तर : बीज उर्वरक, बायोफर्टिलाइजर, दिया जाता है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 जायद प्रदर्शन में मूँग के बीज की कितनी मात्रा अनुमन्य है ?

उत्तर – आई0पी0एन0एम0 में 8.00 कि0ग्रा0 बीज की मात्रा अनुमन्य है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 जायद प्रदर्शन में उर्द के बीज की कितनी मात्रा अनुमन्य है ?

उत्तर – आई0पी0एन0एम0 में 12.00 कि0ग्रा0 बीज की मात्रा अनुमन्य है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 में कौन –कौन से वायोफर्टिलाइजर एवं वायो पेस्टीसाइड दिये जाते हैं ?

उत्तर : पी0एस0बी0 एक पैकेट 200 ग्राम, राइजोबियम कल्चर 200 ग्राम एक पैकेट, ट्राइकोडर्मा 2.00 कि0ग्रा0।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 में हाइब्रीड धान के प्रदर्शन में कितने कि0ग्रा0 बीज दिया जाता है ?

उत्तर : हाइब्रीड धान के प्रदर्शन में 08.00 कि0ग्रा0 बीज दिया जाता है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 हाइब्रीड धान के प्रदर्शन में उर्वरकों की कितनी मात्रा दी जाती है ?

उत्तर : आई0पी0एन0एम0 हाइब्रीड धान के प्रदर्शन में डी0ए0पी0 40.00 किलोग्राम, यूरिया 80 कि0ग्रा0, एम0 ओ0पी0 30 कि0ग्रा0, जिंक सल्फेट 7.5 कि0ग्रा0, उर्वरक दिया जाता है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 के अन्तर्गत रबी में गेहूँ बीज की कितनी मात्रा दी जाता है ?
उत्तर : आई0पी0एन0एम0 के अन्तर्गत रबी में 40 से 45 कि0ग्रा0 बीज दिया जाता है।

प्रश्न : आई0पी0एन0एम0 के अन्तर्गत रबी में कौन–कौन से उर्वरक कितनी मात्रा में दिये जाते हैं ?
उत्तर : आई0पी0एन0एम0 के अन्तर्गत रबी में यूरिया 72 कि0ग्रा0 डी0ए0पी0 40 कि0ग्रा0, एम0ओ0पी0 20 कि0ग्रा0, जिंक सल्फेट 5.00 कि0ग्रा0 उर्वरक दिया जाता है।

प्रश्न आई0पी0एन0एम0 के 01 प्रदर्शन हेतु कितनी धनराशि दी जाती है ?
उत्तर : आई0पी0एन0एम0 के प्रत्येक प्रर्दशन में अधिकतम रू0 3000.00 की धनराशि अनुमन्य है।

आई0पी0एम0

प्रश्न : आई0पी0एम0 के प्रदर्शन किन–किन फसलों में आयोजित कराये जाते हैं ?
उत्तर : सोडिक तृतीय परियोजना के अन्तर्गत आई0पी0एम0 के प्रर्दशन दलहनी एवं तिलहनी फसलों में आई0पी0एम0 का प्रदर्शन कराये जाते हैं।

प्रश्न : आई0पी0एम0 का एक प्रदर्शन कितने क्षेत्रफल में आयोजित कराया जाता है ?
उत्तर : आई0पी0एम0 के प्रर्दशन 4.00 हे0 क्षेत्रफल में आयोजित कराया जाता है।

प्रश्न : आई0पी0एम0 के 01 प्रदर्शन हेतु कितनी धनराशि दी जाती है ?
उत्तर : आई0पी0एम0 के प्रत्येक प्रर्दशन में अधिकतम रू0 13500.00 की धनराशि अनुमन्य है।

प्रश्न : आई0पी0एम0 प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य क्या है ?
उत्तर : आई0पी0एम0 प्रदर्शन का मुख्य उद्देश्य फसलों पर लगने वाले कीट नियंत्रण में फैरोमोनट्रेप एवं वायोपेस्टीसाइड का प्रयोग करते हुए रासायनिक दवाओं के उपयोग को कम करना है।

प्रश्न : आई0पी0एम0 प्रदर्शन में प्रयोग किये जाने वाले मुख्य वायोपेस्ट्रीसाइड कौन–कौन से हैं ?
उत्तर : आई0पी0एम0 प्रद ान में प्रयोग किये जाने वाले मुख्य वायोपेस्ट्रीसाइड नीम आयल, बी0टी, ट्राइकोकार्ड एवं एन0पी0बी0।

प्रश्न सं0 आई0पी0एम0 प्रदर्शन का मुख्य लाभ क्या है ?
उत्तर : आई0पी0एम0 प्रद ान में रासायनिक कीटनाशकों का प्रयोग कम होने से वायु प्रदूशण कम होता है तथा फसल की उत्पादकता में वृद्धि होती है।

फसल विविधीकरण

प्रश्न : फसल विविधीकरण प्रद ान का मुख्य उद्दे य क्या है ?
उत्तर : फसल विविधीकरण प्रद ान का मुख्य उद्दे य मृदा स्वास्थ्य को अक्षुण रखते हुये छोटी जोत को लाभप्रद बनाने हेतु गेंहूँ धान के स्थान पर दलहनी, तिलहनी एवं सब्जी वाली फसलों के उत्पादन को बढ़ावा देना है।

प्रश्न फसल विविधीकरण प्रद ान कितने क्षेत्रफल में आयोजित किया जाता है ?
उत्तर : फसल विविधीकरण प्रद ान 0.4 हे0 में आयोजित किया जाता है।

प्रश्न : फसल विविधीकरण प्रद ान में परियोजना से क्या सुविधा देय है ?
उत्तर : फसल विविधीकरण प्रद ान में परियोजना से अधिकतम रूपये 3000.00 के अन्तर्गत नवीनतम उन्नत प्रजाति का बीज, मृदा परीक्षण के आधार पर संस्तुत उर्वरक एवं जैव उर्वरक तथा प्रमोशनल मैटीरियल के रूप में सम्बन्धित फसल की वैज्ञानिक खेती का साहित्य। रू0 3000.00 से अधिक का व्यय कृशक द्वारा स्वयं किया जाता है।

नादेप, एवं वमीकम्पोस्ट

प्रश्न : नादेप कम्पोस्ट बनाने की विधि का प्रारम्भ कहॉ से हुआ है ?
उत्तर : नादेप कम्पोस्ट महाराष्ट्र के कृषक नारायण राव पाण्डरी पाण्डेय (नाडेप काका) ने विकसित किया है, उन्हीं के नाम पर इसका नामकरण किया गया है।

प्रश्न : नादेप कम्पोस्ट के टॉका का आकार कितना होता है ?
उत्तर : नादेप कम्पोस्ट के टॉका का आकार 10 फिट लम्बा, 6 फिट चौड़ा और 3 फिट गहरा इस प्रकार 180 घन फिट होता है तथा दीवारें में वायो के आवागमन हेतु जगह–जगह छेद रखे जाते हैं।

प्रश्न : नादेप कम्पोस्ट तैयार करने में क्या–क्या सामग्री की आवश्यकता होती है ?
उत्तर : नादेप कम्पोस्ट तैयार करने में सूखे, हरे पत्ते, छिलके, डंठल, जड़ें, बारीक टहनियॉ एवं फसलों के व्यर्थ पदार्थ, पशुओं के बॉधने के स्थान का बिछावन गाय एवं भैंस का गोबर, गैस संयंत्र से निकले गोबर का घोल, सूखी महीन छनी हुयी मिट्टी , गाय तथा बैल के बॉधने के स्थान की मिट्टी अधिक उत्तम रहती है। गौ मूत्र या अन्य पशु मूत्र तथा पानी आदि।

प्रश्न : नादेप कम्पोस्ट तैयार करने में टॉका भरने की प्रक्रिया कितने दिन में पूरी होती है?
उत्तर : नादेप कम्पोस्ट तैयार करने में टॉका भरने की प्रक्रिया एक दिन में पूरी होती है।

प्रश्न : नादेप कम्पोस्ट में एन0पी0के0 की कितनी मात्रा पायी जाती है ?
उत्तर : नादेप कम्पोस्ट में नत्रजन 0.5 से 1.5 प्रतिशत, फास्फोरस 0.5 से 0.9, पोटाश 1.2 से 1.4

प्रश्न : नादेप कम्पोस्ट, टॉका भरने के कितने दिन बाद तैयार होती है ?
उत्तर : नादेप कम्पोस्ट, टॉका भरने के बाद 90 से 110 दिन में तैयार होती है।

प्रश्न : एक टॉका से कितनी मात्रा में नादेप कम्पोस्ट प्राप्त होती है ?
उत्तर : में एक टॉका से एक बार में 3.0 से 3.25 मै0ट0 नादेप कम्पोस्ट प्राप्त होती है।

प्रश्न : वर्मी कम्पोस्ट का तात्पर्य क्या है ?
उत्तर : केंचुवे द्वारा तैयार की गयी कम्पोस्ट खाद को वर्मी कम्पोस्ट कहते हैं।

प्रश्न :वर्मीकम्पोस्ट हेतु मुख्य रूप से कौन सी प्रजाति के कैंचुवे प्रयोग किये जाते हैं ?
उत्तर : वर्मीकम्पोस्ट हेतु मुख्य रूप से इसेनिया फोटीडा,इयू ड्रिल्स इयूजीनी , पेरियानिक्स एक्सवकेटस, लैम्पीटो माउरीटी, डावीटा कलेवी तथा डिगोगास्टर बोलाई आदि जातियॉ कम्पोस्ट में प्रयोग की जाती हैं।

प्रश्न : वर्मी कम्पोस्ट बनाने हेतु टैंक का साइज कितना रखते हैं ?
उत्तर : 02मी0 लम्बाई, 02 मी0 चौड़ाई, 01 मी0 ऊॅचाई रखी जाती है।

प्रश्न : वर्मीवेड क्या है ?
उत्तर : टैंक में 2 से 3 इंच की ईंट की गिट्टी की परत उसके ऊपर 1 इंच मोटी बालू की परत एवं इसके ऊपर 6 इंच अच्छी मिट्टी की परत रखी जाती है, जिसे टैंक से खाद निकालते समय यथास्थिति रहने दिया जाता है। केंचुवे इस मिट्टी में अपना स्थायी निवास बनाये रखते हैं इस परत को ही वर्मीवेड कहा जाता है।

प्रश्न : वर्मीकम्पोस्ट तैयार करने हेतु कौन सी सामग्री की आवश्यकता होती है ?
उत्तर : पुआल, भूसा, गन्ने की खोई, पत्तियॉ, खरपतवार, फूॅस, फसलों के डंठल, वायोगैस अवशेष पशुओं का विछावन, केले के पत्ते, गोबर आदि।

प्रश्न : वर्मी कम्पोस्ट में आव यक तत्वों का प्रतिशत क्या है ?
उत्तर : वर्मीकम्पोस्ट में नत्रजन 1.0 से 1.5 प्रतिशत, फास्फोरस 1.5 प्रतिशत, पोटाश 1.5 प्रतिशत। इसके अतिरिक्त इसमें द्वितीयक तथा सूक्षम तत्व भी मौजूद होते हैं।

प्रश्न : वर्मीकम्पोस्ट कितने दिन में बनकर तैयार होती है ?
उत्तर : पर्याप्त नमी एवं देखभाल रखने पर गढ्ढा भरने के 6 से 7 सप्ताह में वर्मीकम्पोस्ट बनकर तैयार हो जाती है।
प्रश्न : वर्मीकम्पोस्ट का गढ्ढा भरने की क्या प्रकिया है ?
उत्तर : वर्मीकम्पोस्ट बनाने हेतु उपलब्ध सामग्री पुआल, पत्तियॉ, गोबर आदि सड़ने योग्य पदार्थ की 5 से 10 से0मी0 की तह, सप्ताह में 02 बार लगाते हैं तथा प्रतिदिन पानी का छिड़काव करके नमी बनाये रखते हैं। इस प्रकार तब तक तह लगाते रहते हैं, जब तक गढ्ढा पूरा नहीं भर जाता।

प्रश्न : वर्मीकम्पोस्ट गढ्ढे से निकालने की क्या प्रकिया हे ?
उत्तर : खाद निकालने से पहले पानी का छिड़काव बन्द कर देते हैं, जिससे केंचुवे नमी के अभाव में वर्मीवेड में चले जाते हैं और वर्मीवेड के ऊपर की कुछ खाद छोड़ कर भोश निकाल लेते हैं।

मधुमक्खी पालन

प्रश्न : मधुमक्खी पालन का सर्वोत्तम समय कौन है ?
उत्तर : मधुमक्खी पालन का सर्वोत्तम समय वरसात के सीजन के बाद सितम्बर से फरवरी तक है।

प्रश्न : मधुमक्खी पालन के लिये परियोजना से क्या सुविधा देय हे ?
उत्तर : मधुमक्खी पालन हेतु परियोजना से मधुमक्खी पालन बाक्स जिसमें 50 प्रतिशत फेम मधुमक्खी सहित तथा 50 प्रतिशत रिक्त होते हैं। इसके साथ चर्निंग मशीन, मैट, दस्ताने , चाकू आदि। इन 10 प्रदर्शन हेतु अधिकतम रू0 60000.00 देय है।

प्रश्न : मधुमक्खी पालन बाक्स कहॉ स्थापित करना चाहिए ?
उत्तर : मधुमक्खी पालन बाक्स छायादार स्थान पर जहॉ फसलों /पौधों में पुश्पावस्था हो स्थापित करना चाहिए।

प्रश्न : मधुमक्खी पालन बाक्स स्थापित करने में मुख्य सावधानी क्या रखनी पड़ती है
उत्तर : मधुमक्खी पालन बाक्स सदैव स्टैण्ड पर स्थापित करें, चीटियों से सुरक्षित रखें एवं गर्मी के समय मधुमक्खियों को जीवित रखने के लिये उनके पास वर्तन में चीनी का घोल रखना चाहिए।

प्रश्न : शहद निकालते समय क्या सावधानी वरतनी चाहिए ?
उत्तर : शहद निकालते समय फ्रेम से सभी मक्खियों को बुश से झाड़ दें तथा छत्ते को कभी भी हाथ से नहीं निचोड़ना चाहिए। चरनिंग मशीन से शहद निकालने के उपरान्त फ्रेम को बाक्स में यथास्थान रख देना चाहिए ।

फील्ड डे

प्रश्न : फील्ड डे का तात्पर्य क्या है ?
उत्तर : आयोजित कराये गये विभिन्न प्रदर्शनों के माध्यम से परियोजना ग्राम एवं निकटतम ग्रामों के कृशकों को प्रदर्शन स्थल पर एकत्रित करके प्रदर्शन के इम्पैक्ट को दिखाना तथा तकनीकी जानकारी देना है जिससे, देखो और वि वास करो के आधार पर नवीनतम तकनीकी का प्रचार–प्रसार हो सके।

प्रश्न : फील्ड डे का आयोजन कब करना चाहिए ?
उत्तर : आयोजित कराये गये प्रदर्शन की फसल के परिपक्व होने की अवस्था के समय फील्ड डे का आयोजन करना चाहिए।

प्रश्न : किसान मेला आयोजन का सवोत्तम समय क्या है ?
उत्तर : खरीफ में धान की फसल के पुश्पावस्था से पकने के मध्य अथवा रबी में गेहूँ की फसल के पुश्पावस्था से पकने के मध्य किसान मेला का आयोजन सर्वोत्तम रहता है।

प्रश्न :किसान मेला आयोजन हेतु स्थल चयन में किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
उत्तर : स्थल पक्की सड़क के निकट हो, कृशकों के प्रतिभाग करने हेतु आवागमन के सार्वजनिक साधन उपलब्ध हों, परियोजना ग्राम का ऊसर सुधार हेतु चयनित क्षेत्र एक्सपोजर हेतु उपलब्ध हो, पेय जल का साधन निकट में उपलब्ध हो।

प्रश्न : किसान मेले के आयोजन में तकनीकी सत्र का क्या तात्पर्य है ?
उत्तर : कृशि वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न फसलों के उत्पादन की नवीनतम विधि से कृशकों को अवगत कराना तथा कृशकों की सम–सामयिक समस्याओं का निराकरण करना है।